वार्षिक मूल्य 50 रूपये

धर्म जीवन

अप्रैल – 2022

- सुख लालसा की कैद
- सत्य धर्म के प्रवर्तक और शिक्षक
- देवगुरू भगवान के सत्य और शिव रूप पर चिन्तन
- अहं से अन्धकार की उत्पत्ति
- उद्भिद जगत के संबंध में भगवान देवात्मा का उपदेश.....
- शास्त्री जी
- एसिडिटी दूर करेंगे ये घरेलू उपाय
- संगरूर सत्संग
- मल्लेकां (सिरसा) से सत्संग

तुम्हारे विचार के लिए कुछ प्रश्न।

भगवान् देवात्मा की ज्योति को पाकर यदि प्रकृत धर्म का तुम्हें कुछ भी सच्चा ज्ञान हो गया हो, तो तुम भली भांत समझ सकते हो, कि जिस सत्य और देवकोष के वह भण्डार हैं, जिस पूर्ण धर्म जीवन के वह प्रकाशक हैं, उसकी विविध अनुराग शक्तियां तुम्हारे आत्मा तक पहुंचकर, तुम में उस महान उच्च जीवन को उस समय तक उत्पन्न और उन्नत नहीं कर सकतीं, जब तक तुम्हारे हृदय में ऐसे उच्च जीवन के लाभ करने के लिए धन, मान, पद, प्रशंसा, वस्त्र, आभूषण, पति, पत्नी, घर, सन्तान और विविध शारीरिक सुखों और उनके सामानों आदि की न्याई कोई सच्ची आकांक्षा जाग्रत न हो जाए। क्योंकि जब तक किसी वस्तु की आकांक्षा उत्पन्न न हो, तब तक उसे न कोई लाभ करना चाहता है, और न लाभ कर सकता है।

ऐसे उच्च जीवन की आकांक्षा के उत्पन्न होने पर जब तक तुम भगवान् देवात्मा की (जो उस जीवन के भण्डार और दाता हैं) महिमा को सन्मुख लाकर उन के प्रति अपने भीतर सच्ची श्रद्धा अनुभव और इस श्रद्धा के बढ़ाने के निमित्त अपने आत्मा के साथ उनके सम्बन्ध की सच्ची आवश्यकता को अधिक से अधिक उपलब्ध न करो, तब तक तुम्हारे भीतर उनके प्रति वह विशुद्ध अनुराग सूत्र भी उत्पन्न नहीं हो सकता, कि जिस के द्वारा तुम उनके साथ जुड़कर :-

एक ओर जहां उनके देव जीवन के देव प्रभावों को अपने भीतर खैंच सकते हो; वहां दूसरी ओर विविध नीच बन्धनों और नीच सम्बन्धियों के आकर्षण और अहं आदि उत्तेजनाओं के आधिपत्य से धीरे-धीरे निकलकर उनके विनाशकारी प्रभावों से रक्षा पा सकते हो, और अपने आत्मा के जीवन की जड़ को विनाशकारी भूमि से निकालकर भगवान् देवात्मा की जीवन दायिनी भूमि में स्थापन कर सकते हो।

अब प्रश्न यह है, कि क्या तुम्हारे भीतर उच्च जीवन के लिए कोई सच्ची आकांक्षा पाई जाती है? यदि कुछ पाई जाती है, तो क्या आकांक्षा बढ़ती है? क्या भगवान् देवात्मा के सम्बन्ध में तुम्हारे भीतर कोई सात्विक श्रद्धा उत्पन्न हो चुकी है? क्या यह श्रद्धा भी बढ़ती है? क्या इसके बढ़ने से तुम्हारे भीतर उनके प्रति कोई अनुराग अनुभव होता है? यदि होता है, तो तुम उसे किन लक्षणों के द्वारा पहचानते हो? क्या इस अनुराग के शिथिल और नष्ट करने वाले नीच भावों का तुम्हें कुछ सच्चा ज्ञान मिला है? यदि नहीं मिला, तो तुम उनके विनाशकारी प्रभाव से इस अनुराग की क्योंकर रक्षा कर सकते हो? और यदि मिला है, तो क्या तुम एक ओर उन से रक्षा पाने और दूसरी ओर उचित साधनों के द्वारा उस अमूल्य और स्वर्गीय अनुराग के बढ़ाने के लिए कोई यत्न करते हो? यदि करते हो, तो क्या करते हो? और क्या तुम्हारे साधन ऐसे सच्चे होते हैं, कि जो सचमुच तुम्हारे इस अमूल्य और जीवन दायक अनुराग के बढ़ाने में सहायता करते हैं? यदि इन प्रश्नों पर चिन्ता करके किसी ठीक सिद्धान्त पर पहुंच सको, तो आगे तुम्हारे लिए उच्च जीवन का पथ खुल सकता है, अन्थया नहीं।

भगवान देवात्मा

धर्म जीवन

खण्ड 33 अंक 4
अप्रैल – 2022
वार्षिक मूल्य 50 रुपये

सम्पादक
डा. विनोद खेड़ा

सह सम्पादिका
सुरजीत बराड़

सुख लालसा की कैद

मनुष्य अपनी मूल प्रकृति से ही सुख परायण है। सुख का आशिक है और दुख को घृणा करता है। मनुष्य भिन्न भिन्न सुखों का बोधी और प्रेमक है। वह आजाद दिखाई देता है। परन्तु वास्तव में वह सुख के विभिन्न प्रकार के पिंजरों में कैद है। इस लिहाज़ से मनुष्य की प्रकृति पशुओं से भिन्न है। उसे सुख दुख के बोध पशुओं से ही विरासत में मिले हैं। पशुओं के भीतर सुख और दुख की तमीज़ है, परन्तु वह सुख के वह साधन नहीं बना सकता, जो मनुष्य बना सकता है। मनुष्य की विकसित बुद्धि ने सुखों के अम्बार खड़े कर दिए हैं और उसकी सारी सोच ही सुख लालसा की कैदी है। मनुष्य को जिस प्रकार एक एक सुख खींचता है, उस प्रकार उसको अपना शुभ वा हित नहीं खींचता। सुख की पूर्ति में वो अपनी भले को न्यौछावर करने के लिए तत्पर रहता है। यह मनुष्य का वास्तव में असली रूप है।

मनुष्य की धुरी सुख है। सुख के आगे बुद्धि पिछड़ जाती है। मनुष्य का सारा खान पान, पहरावा, उसके संगी साथी, उसका कारोबार उसके मूल्य और कीमतें, उसका जीवन लक्ष्य, उसका धर्म, सब उसके अपने सुखों की लालसाओं के द्वारा बड़े वेग से प्रभावित होते हैं।

जो कुछ खाने पीने में स्वाद लगता है, सुखदायक प्रतीत होता है, मज़ा वा सरूर देता है, मनुष्य उसका ही गुलाम हो जाता है। वह जिस चीज़ का खुद लालसी होता है, उसकी फिर वकालत करता है। सुखदायक पदार्थों की प्रशंसा करता है, उसका पक्षपाती बन जाता है, दूसरों के लिए भी उसकी पोषकता करता है। खाने में सुख प्राप्त करना कोई बुरी बात नहीं परन्तु खान पान के साथ हमारी सेहत वा आरोग्यता जुड़े हुए हैं। साधारणत: मनुष्य सेहत को मुख्य रखकर खान पान निर्धारित नहीं करता, सुख ही सदा बाजी मार ले जाता है। सेहत के लिए हानिकारक वस्तुएं सुख अनुरागी मनुष्य त्याग नहीं सकता। डाक्टर होकर और दूसरों को हिदायतें देकर भी खुद उनका पालन नहीं कर सकता। नशों के सुख के अनुरागी नशों से बर्बाद हो जाते हैं परन्तु छोड़ नहीं सकते। कुछ चटपटे पदार्थों के शैदाई

हैं, तो कोई अधिक मीठा खाने के। फिर बिना फीस के दूसरों के पास उनकी वकालत करते हैं। सुख उनको घसीटे फिरते हैं, उनके परिणामों से बेख़बर वह खुश प्रसन्न रहते हैं।

बचपन से ही यह सुख रूपी सांप अपना फन निकाल लेते हैं। एक बेहद सुन्दर लड़की ज्यों ज्यों बड़ी होती गई, वह मीठे के सुख की अनुरागी बनती गई। माता ने भी बच्ची समझकर नहीं रोका परिणाम यह हुआ कि वह इतनी मोटी हो गई कि उसकी शादी करनी कठिन हो गई। उसकी सुन्दरता को उसके मोटापे ने डस लिया। पिता ने बड़ी मेहनत करके 3 - 4 महीने उसे भूखा प्यासा रखकर, व्यायाम करवाके इस योग्य किया कि वह फिर सुन्दर दिखने लगी और ऐसा लगता था कि अब यह ऐसी गल्ती नहीं करेगी परन्तु वह सुखों की गुलामी ही क्या, जो मनुष्य को अपना भला सोचने दे। अब 33 - 34 साल की उम्र में उसका मोटापा इतना बढ़ गया कि देखने वालों को तरस आता है। उसको सबने समझा लिया परन्तु कोई असर नहीं। मौत सामने दिखाई देती है, परन्तु सुख के आगे अब वह बेबस है। फिर घरवालों ने उसके पेट का आप्रेशन करवाया, जिससे खाने की नस कुछ सिल देते हैं ताकि अधिक खाया न जा सके। कुछ देर उसे ऐसा करना पड़ा, परन्तु फिर खाने की मिकदार बढ़ती गई और अधिक मोटापे के लिहाज़ से पहली अवस्था में ही पहुँच गई और नौजवानी में शूगर की मरीज़ बन गई है। अगर उसे कोई समझाने लगता है, तो उसे बहुत बुरा मनाती है। आजकल बच्चे Fast Food वा तरह तरह के कोक, पेप्सी, चाकलेट, टॉफीज़ ही इतनी मात्रा में खाने लग गए हैं कि छोटी उम्र में तरह तरह की बिमारियों के शिकार हो जाते हैं। 35 - 40 वर्ष की उम्र में दिल के दौरे बढ़ रहे हैं, परन्तु अपने सुख लालसाओं में अंधे इंसान मौत को गले लगाने के लिए सरपट दौड़ रहे हैं।

नशों का सुख मनुष्य को उनका वकील बना देता है। शराब के दो पैग लगाने से दिल को जाने वाली Veins खुली रहती हैं इस बात का बहुत प्रचार है परन्तु यह कहने वाले कितने जन हैं, जो दो पैग पीकर हट जाते हैं। परन्तु प्रत्येक ऐसे लेख में यह लिखा होता है कि न पीने वाले इस तर्क को लेकर शुरू न करें। मनुष्य की नशे के सुख की विवशता ने ऐसे शोशे घड़े हैं, और यह दलीलें बहुत अच्छी लगती हैं। कोई शराब को चौदहवां रतन कहता है। एक फारसी के बड़े शायर ने मुस्लिम होकर शराह में शराब पूर्ण रूप से वर्जित है यह जानकर भी लिखा है जिसका अर्थ है कि यह वह दवाई है, कि जो एक भिखारी को कारूं बादशाह बना देती है।

मनुष्य प्रकृति कितनी अजीब है। मनुष्य ने अपना नंगेज़ ढकने के लिए कुछ न कुछ पहनना शुरू किया था। गर्मी सर्दी से बचने का भी मकसद था धीरे धीरे पहरावा अमीरी का चिन्ह बन गया। मान प्रशंसा प्राप्त करने का आधार बन गया और मनुष्यों ने पोशाक को इतना महत्व दिया कि चाहे खाने को कम मिले, परन्तु कपड़े कमाल चाहिएं। सर्दी में

कीमती कपड़ों का दिखावा करने के लिए स्त्रियां गर्म कपड़े नहीं पहनती पीछे से चाहे कमर दर्द हो या टांग दर्द।

मनुष्य को संग साथ भी ऐसे ही मनुष्यों का चाहिए, जो उसे सुख देते हों। परन्तु मनुष्य की भलाई इसमें है कि वह अपने से बुद्धिमान, योग्य, अपने शुभचिन्तक, परोपकारी वा सात्विक जीवन धारियों को अपना संगीसाथी चुने, परतु वह जीवन नाश करने वाले जनों के संग रहकर संतुष्ट रहता है। उनका परस्पर का सम्बंध चाहे कितना भी हानिकारक क्यों न हो, वह छोड़ेगा नहीं, खुद तबाह हो जाएगा।

गन्दी संगत से एकांत बेहद कीमती है परन्तु सुख अनुराग उसे यह सचाई देखने नहीं देते।

"कुन्द हम जिन्स, ना हम जिन्स परवाज,
कबूतर वा कबूतर, बाज़ बा बाज़।"

सुख की खींच के कारण मनुष्य को अपने शत्रु प्यारे लगते हैं। वह अपने हितैषियों को नहीं पहचानता। जैसे कबूतर कबूतरों के साथ और बाज़ बाज़ों के साथ ही रहना पसन्द करते हैं, वैसे ही नशे के प्रेमक नशेबाजों के साथ, जूएबाज जूएबाजों के साथ रहना ही पसंद करते हैं। एक दूसरे के साथ रहने में तृप्ति अनुभव करते हैं। इस प्रकार सुख अनुरागों की तृप्ति में शत्रु मित्र नज़र आते हैं।

मनुष्य का व्यवसाय और कारोबार भी उसके सुख ही निर्धारित करते हैं। जब बच्चों को पढ़ाई लिखाई अच्छी नहीं लगती मेहनत करने पर कई सुख छिनते हैं, तो वह और काम सीखने लग जाते हैं, इस प्रकार हज़ारों लाखों जन अनपढ़ रह जाते हैं। बहुत कम ऐसे इंसान हैं कि किसी अपने आकर्षण को छोड़कर कोई कठिन काम हाथ में लें। जब बच्चे सिनेमा, टी. वी. और आवारागर्दी में सुख ढूंढने लगते हैं, तो कुछ बच्चे अपनी मर्जी से और कुछ अपने अभिभावकों के दबाब से पढ़ाई में लगे रहते हैं। उस समय के कुछ वर्षों के सुख लेने वाले मजदूर बन जाते हैं। और सुख छोड़ने वाले ऊँचे पदों पर तैनात हो जाते हैं।

मनुष्य के सुख ही उसका लक्ष्य निर्धारित करते हैं। जो सुख सबसे प्रबल है, वही प्राप्त करना मनुष्य का लक्ष्य है। अधिकतर जनों का लक्ष्य अधिक से अधिक पैसा कमाना होता है। ऐडवरड आठवें ने एक स्त्री मिसिज़ सैंपसन के लिए इंगलैंड के तख़्तोताज का त्याग कर दिया। कई जन धन की सुपारी लेकर, केवल धन के लिए ऐसे जनों का कत्ल कर देते हैं, जिनको वह जानते तक नहीं। इसी प्रकार एक एक वैश्या के लिए कई जन धन, घर-बार सब छोड़ देते हैं।

एक सम्पन्न घर का पुत्र, पुलिस की आला पोजिशन प्राप्त बहुत सुन्दर, सड़ौल व्यक्तित्त्व का मालिक, विवाहित, 2 या 3 बच्चों का बाप, बहुत अच्छी सम्पत्ति का मालिक, एक ब्यूटीशन की ओर आकर्षित हो गया, धीरे धीरे उसका आकर्षण इतना बढ़ गया कि वह अपनी डियूटी से गैरहाज़िर होने लगा, उसे पुलिस महकमों से नोटिस मिलने लगे। फिर कुछ दिन डियूटी पर जाता, परन्तु

धीरे 2 शराबखोरी इतनी बढ़ गई कि उस स्त्री के पास ही उसने दम तोड़ दिया उसकी S.P. की यूनिर्फाम वहीं लटकती रही सुख अनुराग कैसे मुर्दा विरान करते है, यह हमारी आखों देखी घटना है।

साधारणत: मनुष्य धर्मों को भी सुख के अनुसार ही अपनाता है। धार्मिक स्थानों पर बड़े बड़े अपराधों को देखकर भी अपने अभ्यास वा सुख वा उसी में फंसे रहते हैं। अपने पिछड़े और मिथ्या विश्वासों में ही सुख मिलता है। धर्मों ने इसी का लाभ उठाकर तरह तरह के सुख देने का लालच देकर मनुष्य को अंधा और पागल बना रखा है।

मनुष्य के मूल्य सुख को लेकर हैं। कसाई भी अपने पेशे को ठीक समझता है, वैश्यावृति में भी अकसर सुखों का बोलबाला है। सुख के विरुद्ध सुनना तक गवारा नहीं होता।

उपरोक्त सचाईयां पुकार पुकार कर कह रही हैं कि मनुष्य हृदय पर सुख लालसाओं का अनुचित अधिकार है, वह अपना जीवन सुख लालसाओं के निर्देश पर व्यतीत करता है। इनके हानिकारक पक्ष को वह नहीं देख सकता। सुख की कैद को तोड़कर कुछ सोचना उसके वश की बात नहीं जैसे मछली आटे की गोली में छुपे कांटे को नहीं देख सकती, उसी प्रकार सुखों में लिपटे दुखों को मनुष्य देख नहीं सकता।

ऐसी सामर्थ्य देवात्मा की रोशनी में है, वह सुखों की भयानक तस्वीर को दिखाते भी हैं और उनसे निकलने का बल प्रदान करते हैं। उनकी शरण में आकर अपनी योग्यतानुसार नीच सुखों के जाल से निकलने के प्रयत्न में पड़ने में ही मनुष्य मात्र की भलाई है। पग पग पर यह सुख हमें गुमराह करते हैं।

- बलदेव सिंह

सत्य धर्म के प्रवर्तक और शिक्षक

पिछले अंक का बाकि

(5)

सत्य धर्म का शिक्षक वही हो सकता है जो सत्य धर्म की ज्योति से ज्योर्तिमान हो। यह ज्योति कि जिसका नाम देव ज्योति है कि जिसमें आत्मा और सत्य धर्म का ज्ञान प्रकाशित होता है यह ज्योति उस हृदय में पैदा हो सकती है कि जो पूर्ण निर्मल हो, पवित्र हो। जो सत्य और शुभ का पूर्ण प्रेमक हो कि जिसने सत्य और शुभ के लिए अद्वितीय त्याग और तप किया हो। यह सत्य और शुभ का प्रेम और मिथ्या अशुभ के प्रति घृणा की देव शक्तियां देवात्मा में पैदा हुई है। इन्हीं देव शक्तियों को विकसित करके देवात्मा ने देव ज्योति और देव तेज को प्राप्त किया है। यह देव ज्योति सत्य धर्म के संबंध में गूढ़ तत्त्वों को दिखाती है। और यही देव तेज को पाकर सैकड़ों हज़ारों पापी, पाप जीवन से उद्धार और धर्म जीवन के अंगों को विकसित करते हैं। देवात्मा देव शक्तियों

के स्वामी है। देव ज्योति और देव तेज के देव प्रभावों के भंडार हैं। और एक मात्र सत्य धर्म के प्रवर्तक और शिक्षक है। जैसे स्वच्छ और निर्मल जल के कई - 2 फुट नीचे तल पर पड़ी हुई चीज़ साफ दिखाई देती है, वैसे ही देवात्मा का हृदय पूर्ण पवित्र और निर्मल होने के कारण उन्हें देव ज्योति में धर्म के संबंध में गूढ़ और गहरे तत्त्व साफ दिखाई देते है।

देवात्मा ने फरमाया है:- "श्री देवगुरू भगवान के आत्मा में जिस सूक्ष्मदर्शिता की अदभुत और विचित्र शक्ति विराजमान है, वह उन्नत होकर इसी हृदय की निर्मलता के कारण धर्म जीवन संबंधी उन सब गूढ़ और अति सूक्ष्म तत्त्वों को अधिक से अधिक देखने के योग्य हुए हैं, कि जो आज तक पृथ्वी के किसी पुरुष ने किसी देश और किसी काल में नहीं देखे थे। पृथ्वी के किसी देश में आज तक कोई संप्रदाय संस्थापक ऐसा नहीं हुआ, कि जिसमें सत्यप्रियता का वह अद्वितीय भाव आया हो, कि जिसकी वर्तमानता से वह सदा सत्य का पक्षपाती रहा हो, और जिसने अपनी शिक्षा में जानबूझकर किसी मिथ्या को श्रेय न दिया हो। इस प्रकार की मिथ्या के भिन्न बहुत से धर्म प्रवर्तकों के जीवन कितने ही उन मोटे - 2 पापों से भी खाली नहीं पाए जाते, कि जिनसे देव समाज के निम्न श्रेणी के सेवक भी विरत पाए जाते हैं। फिर उनके हृदय में वह पवित्रता वा निर्मलता क्योंकर आ सकती थी, कि जैसी श्री देवगुरू भगवान के जीवन में विशेषता है, और जो उनकी साधारण तत्त्व दर्शिता की शक्ति के काम में आने के लिए आवश्यक थी? नहीं आ सकती थी, इसलिए उस काल में नहीं आई।"

(6)

सत्य धर्म का राज्य आने से मनुष्य का और उसके नीचे के जगतों का भविष्य क्या होगा :- सत्य का भविष्य बहुत सुनहरा है, शुभ का भविष्य बहुत सुनहरा है। सत्य और शुभ का राज्य आने के लिए ही है। सत्य धर्म के राज्य का अर्थ सत्य और शुभ का राज्य है। सत्य धर्म का राज्य आने से मिथ्या और अंधविश्वासों का नाश होगा। झूठ, मूठे विश्वास, झूठी प्रतिज्ञा, झूठे और मिथ्या ज्ञान, मिथ्या मूलक डर समाप्त हो जाएगा। मोटे पाप अर्थात् चोरी, रिश्वत, बेईमानी, नशे, मांसाहार, ठगी, व्यभिचार, जीव हत्या आदि का नाश होगा। लोग पहले किए हुए पाप कर्मों का परिशोध करेंगे। सत्य धर्म के राज्य आने से नीच अनुरागों और नीच घृणाओं का क्रम क्रम से नाश होगा। सत्य धर्म के राज्य आने से मनुष्य आत्माओं में उच्च भावों, उच्च अनुरागों, उच्च घृणा का विकास होगा और योग्य उच्च जीवनधारी, परोपकारी इन्सान पैदा होंगे। निम्न घरों में सत्य धर्म का राज्य आवेगा, वहां अच्छे पुत्र, अच्छे पिता, माता, अच्छे पति, पत्नी अच्छे भाई बहन, अच्छे पड़ोसी, अच्छे नागरिक, अच्छे मनुष्य, पशुओं और पौधों के सेवाकारी, भौतिक जगत के सेवाकारी पैदा होंगे।

देव राज्य अर्थात् सत्य और शुभ का राज्य आने से दिल और दिमाग से रोशन सच्चे फिलासफरों, सच्चे कवियों, सच्चे लेखकों और

प्रभावशाली पत्रकारों की एक शानदार नसल पैदा होगी। यह दुनिया एक नया रूप ग्रहण करेगी। इस पृथ्वी पर एक नई सभ्यता, नई संस्कृति और अद्‌भुत संस्थाओं का जन्म होगा। देवात्मा के देव प्रभावों से जीवन पथ के राहियों के लिए एक नया संसार खुलेगा और इस पथ के हज़ारों राही होंगे। देवात्मा के देव प्रभाव जिन नसल को पैदा करेंगे, उसमें व्यभिचार का निशान न होगा, न बेईमान होंगे, न चोर, नशई, मांसाहारी, जुएबाज़ होंगे, और न कोई किसी का कर्जा या अमानत दबाएगा। सभ्यता की सीढ़ी में सबसे नीचे के स्थान पर भी चरित्रवान जन ही पाए जाएंगे और नीच अनुरागों और नीच घृणाओं के इलाज के लिए और उच्च भावों को विकसित करने के लिए बहुत सी संस्थाएं खुलेंगी, एक नए युग का निर्माण होगा। इस पृथ्वी पर सच्चा स्वर्ग पैदा होगा। मनुष्य और उसके नीचे के सारे जगतों की भलाई का रास्ता सदा सदा के लिए खुल जाएगा।

– गौतम जी गोनियाना

देवगुरू भगवान के सत्य और शिव रूप पर चिन्तन

मेरे और मेरे परिवार के सच्चे हितकर्ता, परम पूजनीय सतगुरू मैं आपके पवित्र श्री चरणों में सिर रख कर आशीर्वाद प्रार्थना करता हूं।

भगवन! मैं आज जब आपके देवरूप को सन्मुख लाने की आकांक्षा को लेकर अपना साधन करने लगा, तब मेरे सामने आपके लक्ष्य के यह यह शब्द आए "सत्य शिव सुन्दर ही मेरा परम लक्ष्य होवे, जग के उपकार ही में जीवन यह जावे"। मैंने बार बार उनको पढ़ा और उनपर विचार किया। सत्य के पद को सन्मुख लाकर मैंने देखा कि आपके भीतर सत्य के लिये जो पूर्णाङ्ग अनुराग वर्तमान है, आज तक दुनियां के किसी महापुरुष के जीवन में वह सत्य का पूर्णाङ्ग अनुराग दिखाई नहीं देता। इसी सत्य अनुराग से परिचालित होकर आपने जिस कदर असत्य के दूर करने और मिथ्या के मिटाने में संग्राम किया है, और असत्यवादी और मिथ्या परायण जनों से जिस क़दर आघात खाए हैं, गोया सारे संसार को ही आपने अपना शत्रु बना लिया है आपने सारे मिथ्या परायण सम्बन्धियों और सारे लोगों से कट कर अकेले रह कर सत्य का प्रचार किया है, हर एक जगह, ख्वाह कितनी मुसीबत आवे, सदा सत्य का साथ दिया है। ओह! मुकद्दमों के दिनों में जबकि आपके मुखालिफ़ों की तरफ से तंग किया जाता था और मुखालिफ़ों की तरफ से आपको जेल में पहुँचाने का यत्न किया जाता था, कि आप यह कह दें, कि जो कुछ "धर्म जीवन में लिखा गया हैं वह मेरे निसबत लिखा गया है और हमारे इलम से लिखा गया है, तो माफ़ी देकर मुकद्दमा छोड़ सकता हूँ, आपके मुखारबिन्द से मैंने यह इलफ़ाज सुने, कि जेल के ख़ौफ़ से और किसी जिस्मानी अज़ाब से डर कर हम सत्य को नहीं छोड़ सकते। जो कुछ हमने किया नहीं और जिसका

हम को इलम नहीं, वह हम किस तरह से कह सकते हैं? वाह! सत्य के लिए कुर्बान होने की क्या ही सुन्दर मिसाल!! जहां सारे असत्यवादी कहते हैं, कि इस कदर कह कर जान अज़ाब से छुड़ा लेने में क्या हर्ज हैं, वहां आपका सत्य अनुरागी हृदय उनको धिक्कारता था। इसी सत्य को स्थिर रखने के लिए आपने कितने... रुपये की पुस्तकें जला दीं। ओह! जिन पुस्तकों को दुनियां के लोग अपने धर्म साधन का ज़रिया देखते थे, और अब तक देखते हैं, उनमें जब आपकी देवज्योति ने असत्य का अंश देखा, तब आप ने फ़ौरन हुक्म दिया कि हम सत्यवादी होकर औरों में असत्य नहीं फैला सकते। इसी सत्य के चलने में आपने नज़दीक से नज़दीक के सम्बन्धों का साथ छोड़ा। अपनी बिरादरी का साथ छोड़ा, मगर किसी तरह भी सत्य को नहीं छोड़ा। आह! आपके देवरूप की यह सुन्दर झलक किस कदर आकर्षणीय!! किस कदर मोहनी!! आपने जब देखा, कि बाबू केशव चन्द्र सेन ने अपनी कन्या का छोटी उमर के महाराजा कूच बिहार से विवाह कर दिया, तब आपने उसके मुख़ालिफ़ तहरीरें निकाल कर सारी ब्रम्ह समाज में आंदोलन पैदा कर दिया। भगवन्! मैं जिस कदर आपके इस सत्य अनुराग पर विचार करता हूं, उसी कदर मुझको हिन्दु, क्या मुसलमान, क्या आर्य समाजी और क्या ईसाई, क्या मुसाई, क्यश अहमदी और क्या मुहम्मद, सब लोग जो आपके मुख़ालिफ़ बने, यह साधारणत: आपके इसी सत्य अनुराग के कारण ही दिखाई देते हैं। अगर आप भी उनकी तरह अपने मिथ्या विश्वास कायम रखते तो वह आपको इस कदर नफरत न करते। मगर आपको आज तक कभी भी मिथ्या परायण लोगों की घृणा ने, उनके सामने और दुख देने ने, अपने सत्य के पथ से नहीं गिराया। भगवन्! आपका रूप किसी तरह मनुष्य सृष्टि को दिखाई दे सके।

भगवन्! आपके लक्ष्य का दूसरा पद 'शिव' है। इसी शिव अनुराग ने आपको भरी जवानी में अपना सुख स्वाद छोड़ कर केवल लोगों का मंगल करने के लिये अपना आप भेंट धरने को तैयार कर दिया। आप जिस अमंगल की नारकीय लीला दुनियां में देख रहे थे और जिस विनाश पथ में मनुष्य सृष्टि को जाते और तबाह होते अनुभव कर रहे थे और दूसरी तरफ़ मंगल का जो सुहावना और स्वर्गीय दृश्य आपके सन्मुख था, दुनियां को उससे वंचित देखते थे, उस अमंगल को दूर कर उसके स्थान में मंगल का राज्य लाने और मनुष्य सृष्टि को इसी दुनियां में नर्क से निकालकर स्वर्ग राज्य में पहुंचाने के लिये आपने जिस कदर संग्राम किया है, जिस कदर अपना आप इन्च इन्च कुर्बान किया है, उसकी मिसाल भी कहीं देखीं नहीं जाती। इस मंगल के लाने में आपने एक एक बदनामी के हृदय विदारक तीर खाए हैं, मगर मंगल का साथ नहीं छोड़ा। ओह! आपके मंगलमय रूप की यह झलक, वह दोनों पादरी और बाबू प्रताप चन्द्र मौज़मदार कहां देख सकते थे, कि जिन्होंने आप को एक असहाय कन्या का मंगल करने से रोकना चाहा था।

और उनको सिवाए मंगल स्वरूप के, और कौन ऐसी धतकार दे सकता था, जैसी आपने उनको दी। भगवन्! अगर आप भी दुनियां के हरदिल अज़ीज़ बनना चाहते, तो आप अपने महा लक्ष्य को सिद्ध न कर सकते। आप 'शिव' अनुरागी होकर किसी को किसी भी रिश्ते में अमंगल करता देख नहीं सकते। अगर दुनियां के लोगों में आपके मंगल स्वरूप को देखने की आँख होती तो आपकी इस अज़मत पर कुर्बान हो जाते। आपने जब देखा कि छोटा भाई बड़े भाई की उस आज्ञा से बाहर जाता है कि जिसमें रहने के लिये उसको बाध्य किया गया है, या बेटा बाप की उस आज्ञा से बाहर जाता है, जो उसके हित और मंगल के लिए दी जाती है, तब आपने दो टुक फ़ैसला कर दिया, कि हम किसी भी रिश्ते में अमंगल आता देख नहीं सकते और उसको जवाब दे दिया। कहाँ है, दुनियां में ऐसी मसाल? किसी महापुरूष में इस कदर बारीक और प्रबल हिस्सें कि बेटे से जुदा हो जाना कबूल, उसकी जुदाई के सदमें सहना मंजूर और इस अलैहदगी से उनको अबतर हालत में देखकर असह्य से असह्य आघात खाना मंजूर, मगर हित और मंगल के असूल को छोड़ना किसी तरह मंजूर नहीं। वाह! सच्चे हित और मंगल की कैसी लासानी मिसाल! हां मंगलमय रूप के देखने की कुछ झलक रखने वाले के लिये कैसी मोहित करने वाली मिसाल!! बेटे की परवाह नहीं, बीवी की परवाह नहीं, दुनियां की परवाह नहीं। अगर परवाह है, तो अपने महा लक्ष्य के पूरा करने की। भगवन्! आप के ऐसे मंगल स्वरूप आविर्भाव को देखने वाले जन पैदा हों। आपके ऐसे देव रूप को देखने के लिए अधिक से अधिक ज्योति मिले। मैं आपके देव रूप पर मोहित हो सकूं और ज्यादा से ज्यादा उसको अपने सन्मुख ला सकूं। मेरी यह कामना पूरी हो, पूरी हो।

आपका तुच्छ सेवक

सूचना

धर्म जीवन सम्बंधी हर प्रकार की जानकारी के लिए, चंदा आदि भेजने, कोई मैटर आदि भेजने के लिए साथ लिखे पते पर सम्पर्क करें या लिखें। : - श्रीमान बलदेव सिंह जी

House No. 3154, Sector 21-D,
Chandigarh - 160 022
Mobile : +91 81465-53154

देव समाज के अकाउंट का पता इस प्रकार है।

DEV SAMAJ (G)
Central Bank of India, Sector 22, Chandigarh
Account No. : 3702002919 | IFSC Code : CBIN0280414

अहं से अन्धकार की उत्पत्ति

विकास क्रम ने इस संसार में क्या अद्भुत क्रिश्में दिखाए हैं। जंगलों में रहने वाला मनुष्य विकासशील बुद्धि रखकर कहां का कहां पहुँच गया है। आज सुख आराम के सामान साधारण जन को भी उपलब्ध हैं, वह राजाओं महाराजाओं के पास नहीं थे। ब्रहमाण्ड के विषय में अन्ध कार में कल्पनाओं का राज था। एक 2 सन्देश भेजने के लिए मीलों चलकर जाना पड़ता था। जबकि अब गरीब से गरीब जन के पास मोबाईल है, पल - 2 की ख़बर एक दूसरे के पास पहुँचती है। विज्ञान की उन्नति ने क्या मैडीकल साईंस, क्या विश्व के ग्रहों, सूर्य चन्द्र की दूरी, सैटेलाईट के द्वारा क्या 2 किश्में हो रहे हैं, सब हमारे सामने हैं। इन विषयों में वैज्ञानिकों ने हमारा अन्धकार दूर किया है। हमें तरह 2 की सुख सुविधाओं से सुख पूर्वक जीने का अधिकार दिया है। घण्टों का सफर मिन्टों में करने का असीम सुख दिया, हमारे बहुत बड़े सौभाग्य हैं कि हम इस युग में पैदा हुए हैं।

परन्तु सोचने की बात यह है कि दुनिया भर की सहूलतें रखकर भी मानव जगत दुःखी क्यों है। इस संसार में झूठ, फरेब, जालसाजी, ईर्षा, द्वेष और स्वार्थ का राज क्यों है। चारों तरफ हाहाकार है। बलात्कार की घटनाएं रूह को झंझोड़ देती है। इसका कारण एक ही है कि मनुष्य का समझ, बूझ वा तीक्ष्ण बुद्धि रखकर भी उसका एक पक्ष अन्धकार युक्त है। वह अपने स्वभाव और उस स्वभाव की परिचालक शक्तियों के लिहाज से पूर्ण अन्धकार में है। कुछ ऐसे जन हैं जिन्हें जन्मजात विशेष पूंजी मिली है, उनमें वह अपने विचारों द्वारा अपने स्वभाव को कुछ जानने के योग्य हो जाते हैं। परन्तु अपनी आन्तरिक शक्तियों से संयुक्त अपने आत्मा के बारे में वह भी अन्धकार में ही हैं। क्योंकि अपने आपको जानने के लिए जिस ज्योति की आवश्यकता है, वह जयोति किसी मनुष्यात्मा में वर्तमान नहीं है।

मनुष्य अपने आपकों क्यों वा अपने स्वभाव को क्यों नहीं जानता क्योंकि प्रत्येक जन को अपना आप, अपने विचार, अपना दूसरों के प्रति बृताव, अपनी इच्छा, अपना सुख ही ठीक लगता है, उसका यह जाप "मैं ठीक हूं" सब प्रकार के दुःखों, क्लेशों, पापों, दुर्व्यवहारों को उत्पन्न करता है। बहुत ही कम जन हैं जो यह जाप न करते हों। अपने प्रति ठीक होने की और दूसरों के ग़ल्त होने की ग़ल्तफहमी का अक्सर मनुष्यात्मा शिकार रहते हैं। कई बार अपना विचार अपनी सोच सरासर ग़ल्त होने पर भी मनुष्य अपने आपको सही साबित करने के लिए बहस करता है, दूसरों का अपमान करता है। बड़े से बड़े उपकारी वा हितकारी का भी लिहाज़ नहीं करता, यह मनुष्यात्मा की त्रासदी है। लगभग हम सब ही कम वा ज़्यादा इस ग़ल्तफहिमी के कभी न कभी शिकार हो जाते हैं। परन्तु दर्जों का फ़र्क है और यह फर्क़ अपनी प्रकृति के अनुसार होता है। यही अहं अनुराग है।

धर्मों के इस विश्वास ने कि हमारा धर्म

वा विश्वास ठीक है ने बहुत भयानक रूप धारण कर लिया है। अपने 2 विश्वासों को समझकर घृणा फैलाई जाती है। एक दूसरे के विरुद्ध प्रचार ही नहीं, बल्कि अत्याचार भी होते हैं। इसके उदाहरणों से हमारा इतिहास भरा पड़ा है। यह विश्वासों के अहंकार बड़े 2 युद्धों का कारण रहे हैं। यह केवल हमारे देश में ही नहीं, बल्कि विकासशील वा सुसभ्य देशों में भी धार्मिक युद्धों का कारण बने हुए हैं। यह सिलसिला अब भी बरकरार है।

यह विश्वास कि जो हमारे विश्वास के विरुद्ध है वह ठीक नहीं, परिवारों और समाजों में भी कलह क्लेश का कारण बनते हैं। अपने अहंकार में एक 2 जन इतना अन्धा हो जाता है कि अपने पक्ष को ही ठीक और दूसरों को ग़ल्त साबित करने में सारा ज़ोर लगा देता है। उसके सामने दूसरों की सोच वा तर्क सब निरर्थक पड़ जाते हैं।

अपने आपको ठीक समझने वाले वा अहंकारी जन का भ्रान्ति में रहना, पक्षपाती रहना, सच्चाई को जानने की कोशिश न करना, वा जानकर भी न समझने का नाटक करना आवश्यक हैं। अपने विरूद्ध विश्वास रखने वाले जन को गुमराह समझना भी आवश्यक है। इसी कारण वैज्ञानिकों को केवल जनता का विद्रोह ही नहीं झेलना पड़ा अपनी जाने भी गंवानी पड़ी हैं।

अहंकारी मनुष्य अपने हितकर्ता को भी अपने विश्वास के विरूद्ध पाकर लताड़ता है, गन्दी भाषा प्रयोग करता है। वह किसी प्रकार भी अपने विश्वास को तर्क की कसौटी पर तो ठीक तोलना नहीं चाहता। अपना विचार, सोच, विश्वास को ठीक समझने की प्रवृति मनुष्य के व्यक्तिगत सम्बन्धों का तो नाश करती है, वहां समाजों वा सस्थाओं की भी महा हानि करती है।

यदि दूसरे जन एक 2 जन के विचार या विश्वास से सहमत नहीं होते मनुष्य अहंकार में उनको घृणा करने और उस घृणा को दूसरों तक फैलाने के लिए भी मजबूर हो जाता है। इस प्रकार स्वयं अशान्त रहता है और दूसरों की भी शान्ति भंग करता है। मनुष्य मात्र को यह श्राप जन्म से ही मिलता है, डिगरीयों का फर्क़ है।

परम पूजनीय भगवान देवात्मा जो सत्य और हित की अथाह शक्तियां रखते थे, पाप और बुराई के प्रति असीम घृणा रखते थे, जिन्होंने मनुष्य मात्र की भलाई के लिए अपना सब कुछ कुर्बान कर दिया, उन्हें क्यों इतना सताया, तड़पाया गया, क्यों उन पर झूठे इल्ज़ाम लगाकर घृणा फैलाई गई, क्योंकि वह केवल मनुष्य के अन्धविश्वासों के विरुद्ध और सचाई और भलाई के लिए खड़े थे, उनकी धर्म और आत्मा की शिक्षा विज्ञान की सच्चाईयों पर आधारित थी, परन्तु अपने झूठे विश्वासों के अन्धकार में ग्रस्त मनुष्य स्वयं गुमराह होकर, उन्हें ही गुमराह समझने लगे। अपने अन्ध विश्वासों के पक्षपाती अपने आपको ही ठीक और देवात्मा को ग़ल्त साबित करने पर तुले रहे। मनुष्यमात्र की कैसी विडम्बना! परम पूजनीय

भगवान देवात्मा के सत्य अनुराग से ही ऐसी अद्वितीय ज्योति का प्रकाश हुआ, जिसको पाकर मनुष्यात्मा अपनी अपनी योग्यता के अनुसार अपने आत्मिक अन्धकार के देखने के योग्य होते हैं और हुए हैं। उन्हें अपनी पापी, अपराधी और मिथ्या विश्वासी बनाने वाली शक्तियों का ज्ञान होता है और हुआ है। देव समाज का इतिहास इसका गवाह है। यह अवस्था कठिन साधना से प्राप्त होती है, परन्तु शोक! हम अभागे आत्मा उस सीमा तक संग्राम नहीं करते और अन्धकार में ही भटकते रहते हैं। जिन सौभाग्यवान जनों ने अपने प्रकृत अहंकारी रूप को गुरू महाराज की ज्योति में देखा है और कठिन साधनों में से गुजरे हैं, उनकी सुन्दरता के उदाहरण हमारा मार्ग प्रशस्त कर सकते परन्तु यह बहुत कठिन मार्ग है, जिस पर चलने की योग्यता बहुत ही विरले जनों में होती है। काश! हम इस ओर कुछ न कुछ कदम बढ़ा सकें।

उद्भिद जगत के संबंध में भगवान देवात्मा का उपदेश 19 मार्च सन् 1912 ई.

हमारी प्रतिदिन की ज़िंदगी में उद्भिद जगत का बहुत बड़ा हाथ है। खाने के लिए अनाज, पहनने के लिए कपड़े और रहने के मकान के लिए लकड़ी, ग़रजे कि जिस तरफ निगाह उठा कर देखो, उद्भिद जगत के दान की भरमार है। यदि यह जगत लोप हो जाए, तो हमारा जीना असंभव है। यह जगत अपने ऊपर अनगणित हितकर फल धारण करके सैकड़ों और हज़ारों मनुष्यों और पशुओं को कह रहा है कि तुम लोग आओ और मुझसे टोकरों के टोकरे फलों के भर के ले जाओ। एक-एक पौधा जो बहुत बड़े संग्राम के अनन्तर फल तैयार करता है वह किसके लिए? केवल औरों के हित के लिए। परन्तु उसके खिलाफ एक-एक मनुष्य उमर भर धन कमाता है, वह किस के लिए? केवल अपने ही लिए और यदि उसका बस चले, तो मरने पर भी उसे अपने साथ ही ले जाना चाहता है। ऐसे मनुष्यों की तुलना में उद्भिद जगत कितना बड़ा उपकारी है, जो केवल हमारे हित के लिए बेशुमार फल-फूल और अन्य वस्तुएं तैयार करता है। इस जगत का उपकारी रूप प्रतिदिन हमारे सामने आना चाहिए और हमें उसके लिए सेवाकारी बनना चाहिए, क्योंकि जिस जन का हृदय अपने उपकारी के लिए भी सेवाकारी होना न चाहता हो, वह इंतहा दर्जे का स्वार्थपयाण है। इसके विभिन्न उद्भिद जगत के संबंध में यह बात भी सामने लाने की आवश्यकता है कि एक-एक पौधे के जिस ओर सूर्य की किरणें अधिक पड़ती हैं, उसका उसी ओर का हिस्सा अधिक फलदार होता है और उसके विरुद्ध जिस हिस्से पर सूर्य की किरणें लगातार नहीं पहुंचती वह फलदार नहीं होता। अब जैसे उद्भिद जगत में यह असूल काम कर रहा है, वैसे ही रूहानी जगत में भी यही असूल काम करता है। हमारी यह गहरी आकांक्षा है कि तुम नेचर के इस सच्चे असूल को पहचानो

शेष पृष्ठ 20 पर

शास्त्री जी

(लाल बहादुर शास्त्री के सपुत्र द्वारा लिखित)

देश के इतिहास में दो अक्तूबर का दिन महत्वपूर्ण ऐतिहासिक दिन है। इस तारीख को राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के जन्मदिन के साथ ही लालबहादुर शास्त्री जी का भी जन्मदिन पड़ता है। इन दोनों महापुरुषों ने अपने व्यक्तित्व एवं कार्यों से अपने देश में ही नहीं, बल्कि समूचे विश्व में अपनी छाप छोड़ी है, जो इतिहास के पन्नों पर सदैव अंकित रहेगी। गांधीजी ने सत्य, अहिंसा और प्रेम के अमोघ अस्त्र से देश को आज़ादी दिलाई और दुनिया के सामने एक मिसाल पेश की।

अन्य कई लोगों की तरह शास्त्रीजी पर भी गांधी जी की अमिट छाप बाल्यकाल से ही रही। हम यह भी कह सकते हैं कि वह अपने बचपन में जब शायद गांधीजी का नाम भी नहीं जानते होंगे, तभी से गांधी जी के पथ के राही बन गए थे।

शास्त्रीजी के बारे में मुझे कुछ घटनाएं याद हैं, जो मुझे तथा अन्य कई लोगों को भी प्रेरणा देती हैं। उनके बचपन की बात है। एक बार उनके मामा विंध्येश्वरी जी ने उन्हें यह वचन दिया कि तुम कबूतर को खपरैल से उतार कर मुझे दे दो, मैं उसे न तो मारूंगा और न खाऊंगा। बालक लालबहादुर उनके कहने में आकर खपरैल पर चढ़कर कबूतर पकड़कर ले आया और मामा को दे दिया। मामा ने उस कबूतर को मारा और पकाकर खा गए। बालक लालबहादुर को बड़ा दुख हुआ। मामा के झूठ बोलने और कबूतर की हत्या करने पर उन्होंने दो दिनों तक खाना नहीं खाया। हरदम वह कबूतर उनके दिलो-दिमाग में घूमता रहा। आख़िरकार मामा के इस वचन पर कि आज से वह न मांस खाएंगे और न जीव हत्या करेंगे, लालबहादुर जी ने खाना खाया।

एक दूसरी घटना है। शास्त्रीजी अपनी किशोरावस्था में एक बार अपने हम-उम्र मामा लल्लन के साथ शाम को घूमने बाहर निकले हुए थे। घर लौटते समय एक बूढ़ा आदमी सिर पर टोकरी रखे आम बेच रहा था। आम का भाव पूछा, तो उसने कहा- शाम हो गई है, इसलिए एक आने में 100 आम दे देंगे। एक आना देकर लालबहादुर ने 50 आम ही लिए। इस पर मामा ने पूछा कि जब वह बूढ़ा एक आने में 100 आम दे रहा था, तो तुमने 50 आम ही क्यों लिए। बालक लालबहादुर ने कहा, 'मामा, वह मजबूरी में 100 आम दे रहा था। हमें किसी की मजबूरी का फ़ायदा नहीं उठाना चाहिए।'

'होनहार बिरवान के होत चीकने पात' वाली कहावत को शास्त्रीजी बाल्यकाल से ही चरितार्थ करने लगे थे। जब वह कुछ बड़े हुए और विद्याध्ययन कर रहे थे, उसी समय 1917 में एक ऐसी घटना घटी, जिसने उनके जीवन की दिशा बदल दी। 1917 में हिंदू विश्वविद्यालय

की स्थापना के उद्घाटन अवसर पर गांधी जी द्वारा दिए गए भाषण का प्रभाव उन पर इतना पड़ा कि उन्होंने पढ़ाई बीच में ही छोड़कर गांधी जी के आह्वान पर स्कूल का बहिष्कार करने का निश्चय कर लिया। गुरुजनों, विधवा मां तथा अन्य रिश्तेदारों के समझाने का कोई असर उनके मन पर नहीं पड़ा। गांधी जी को वह अपना आदर्श मानने लगे। शीघ्र ही वह गांधीजी के दिखाए गए पथ पर चलने वाले एक सच्चे अनुयायी बन गए।

गांधीजी से ही उन्होंने सत्य, अहिंसा, देशप्रेम और स्वावलंबन की दीक्षा ली। वह ताउम्र सादा जीवन उच्च विचार, स्वावलंबन एवं वसुधैव कुटुंबकम के अनुगामी रहे। गांधीजी ने स्वराज मिलने पर कहा था कि यह उनके लंबे सफर का पड़ाव है। जब तक एक भी आंख में आंसू है, उनके संघर्ष का अंत नहीं हो सकता। गांधीजी के इसी लक्ष्य को शास्त्रीजी ने उच्च राजनीतिक पदों पर पहुंचकर सदैव पूरा करने का प्रयास किया। इन प्रयासों में उन्हें सफलता भी मिली। यही कारण है कि उन्होंने पराई पीड़ा को समझा और उस पीड़ा को शांत करने का अनवरत् प्रयास किया और वे नेता से जनसेवक बन गए।

गांधीजी की ही भांति शास्त्रीजी भी गीता में वर्णित निष्काम कर्म के उपासक रहे। जहां निष्काम कर्म है, वहां न पद का मोह है, न धन का लोभ, न यश की लालसा और न कीर्ति की अभिलाषा। केवल जीवन का एकमात्र उद्देश्य - सत्कर्म करना। शास्त्रीजी के जीवन पर यदि विहंगम दृष्टि डालें, तो स्पष्ट होगा कि उन्होंने इन बातों को पूरी तरह आत्मसात कर लिया था। रेल दुर्घटना से आहत होकर रेलमंत्री के पद का त्याग, देश के सर्वोच्च पद पर पहुंचने पर भी सादगी, नाममात्र का भी अंहकार नहीं। प्रचार - प्रसार से सदैव दूर। वे युद्ध विजेता बनकर भी शांतिदूत बने और अपने बच्चों के आग्रह पर कर्ज़ लेकर कार खरीदने वाला देश का प्रधानमंत्री बैंक का कर्ज़ छोड़कर हमेशा के लिए दुनिया से विदा हो गया।

वे गांधीजी को अपना इष्ट और आदर्श मानते थे, इसलिए जब कभी उनकी तुलना गांधीजी से की जाती थी, तो वह इस पर एतराज़ करते थे। वे अपने जन्मदिन की तारीख़ कभी किसी को नहीं बताते थे। एक बार पंडित जवाहरलाल नेहरू को कहीं से पता चला, तो उन्होंने राजघाट पर शास्त्रीजी से पूछा कि लाल बहादुर, तुम्हारा जन्मदिन भी दो अक्तूबर है? शास्त्रीजी ने जवाब दिया- गांधी जी का जन्मदिन सबका जन्मदिन है।

नोट :- उनकी ईमानदारी की एक सबक अमोज घटना है। उस समय मन्त्री के तौर पर उन्हें 50 रुपये वेतन मिलता था, उन्हें कुछ रुपयों की ज़रूरत पड़ी, वेतन के रुपये ख़त्म हो गए थे, तो उनकी पत्नी ने 5 रुपये जोड़कर रखे थे, लाकर दे दिए। उस समय तो उन्होंने ले लिए बाद में सरकार को लिख दिया कि मुझे वेतन 5 रुपये कम दिए जाएं, मेरा इसमें गुज़ारा हो जाता है। कैसी शानदार ईमानदारी का उदाहरण।

एसिडिटी दूर करेंगे ये घरेलू उपाय

☆ ज्यादा समय तक भूखे न रहें। यह एसिडिटी का बड़ा कारण है। जब अमाशय के एसिड को कुछ पचाने के लिए नहीं मिलता तो पेट की अंदरूनी म्यूकस की परत को ही पतला करने लगता है।

☆ असमय खाकर न सोएं या लेटें।

☆ तेज मिर्च - मसालेदार, तला, पैकेटबंद, स्ट्रीट/जंक फूड, सिरके वाले भोजन, जरूरत से ज्यादा चाय - कॉफी, कोल्ड्रिंक से दूरी बना ले।

☆ वे सभी चीजें जिनका पीएच मान कम होता है, यानी जो अम्लीय (एसीडिक होती हैं उन्हें बिल्कुल सीमित मात्रा में लें, जैसे विनेगर, टमाटर, अनानास, अंगूर, खट्टे फल जैसे नींबू, मौसम्बी, संतरा आदि)

एसिडिटी दूर करने के घरेलू उपाय

दो गिलास पानी में 1 चम्मच सौंफ, 5 - 6 तुलसी के पत्तें, 2 लौंग, आधा चम्मच जीरा, चौथाई चम्मच अजवाइन, चौथाई चम्मच दालचीनी पाउडर, 2 हरी इलाइची के दाने, 1 चम्मच मिश्री और 1 इंच अदरक का टुकड़ा डालकर एक गिलास हो जाने तक उबाले। छानकर गुनगुना पी लें।

इन चीज़ों का सेवन करें

फल व अन्य खाद्य पदार्थ केला पीएच को संतुलित करता है इसमें भरपूर पोटैशियम, कैल्शियम, एंटीऑक्सीडेंट और फाइबर होते हैं। एसिडिटी दूर होती है। सेब, तरबूज, अनार और पपीता भी इसमें फायदेमंद होते हैं। पुराना चावल, गेहूं, जौ, मूंग, करेला, लौकी, बथुआ, अनार, आंवला, खीरा ककड़ी, परवल, पालक, ब्रोकली, तोरई, गिलकी, मिश्री, उबालकर ठंडा किया हुआ पानी, शहद, सत्तू, एसिडिटी कम करते हैं। नारियल पानी, ठंडा दूध, छाछ भी एसीडिटी दूर करने में मददगार हैं।

विशेष उपाय

एलोवेरा जूस – अगर एसिडिटी की समस्या अधिक हो तो खाना खाने से पहले और बाद में चार - चार चम्मच एलोवेरा का जूस पी लें। इससे एसिडिटी दूर होगी।

आंवला – इसमें विटामिन सी भरपूर मात्रा में पाया जाता है। खट्टा होकर भी यह एसिडिटी को नियंत्रित करता है। प्रतिदिन दो बार आँवले के 5 - 10 ग्राम पाउडर का सेवन करें। यह एसिडिटी को शांत करेगा।

लौंग और तुलसी – इनके पत्तों को धीरे - धीरे चबाने से भी मितली, उल्टी, एसिडिटी में राहत मिलती है।

संगरूर सत्संग

हर वर्ष की तरह इस बार भी देव समाज (G) के साधन मन्दिर में विशेष सत्संग का प्रोग्राम रखा गया। जिसके लिए डा. नवजोत सिंह जी बार बार प्रेरणा करते रहे। यह सत्संग 23 फरवरी, 2020 तक रहा। इस सत्संग में शामिल होने के लिए गोनियाना, बठिंडा, मल्लेका, केसूपूरा, चण्डीगढ़, कपूरथला, लुधियाना, पंचकूला, कल्याण आदि स्थानों से धर्म संबंधी पधारे। श्रीमान सीताराम जी के पारिवारिक जन और लोकल धर्म संबंधी और भद्र जन पधारे। धर्म संबंधियों के ठहरने और खाने पीने का बहुत अच्छा प्रबंध किया गया। सभाएं श्रीमान यशपाल भल्ला जी, श्रीमान बलबहादुर जी, धर्म सिंह जी चौहान और गौतम जी ने करवाई।

23.2.2022, रात 8.00 बजे: सभापति : श्रीमान गौतम जी। सबसे पहले भजन 'बचाना मरती रूहों को मिशन अपना बनाया है' गाया गया। फिर एक प्रार्थना विषयक भजन का गान हुआ। इस सभा में बताया गया कि स्कूलों, हस्पतालों के बनाने का उद्देश्य क्या है और देवसमाज का क्या उद्देश्य हैं? देव समाज के आठ पाप छुड़वाने, मिथ्या और नीच जीवन से रक्षा करने, उच्च भाव पैदा करने के महान कारज को उदाहरण सहित बताया गया।

24.2.2022, सुबह 9.00 बजे: सभापति : श्रीमान धर्म सिंह जी चौहान। सभापति जी ने बताया कि भगवान देवात्मा ने 32 वर्ष की आयु में जीवन व्रत ग्रहण किया था। मैं पहले आर्य समाज में था और देव समाज में आकर मुझे पता चला कि मनुष्य का लक्ष्य मोक्ष और विकास है। देव समाज में दो तरह के लोग है पहले जिनको देव समाज विरासत में मिली है और दूसरे जिनको बाहर भटकने के बाद देव समाज मिली है। बाहर के धर्म बताते हैं कि आत्मा में परिवर्तन नहीं आता। बाहर के धर्म मनुष्य को सुखी करने में लगे है परन्तु सच्चा धर्म और सच्चा सुख नहीं आ रहा। सच्चा सुख चार उच्च भाव पैदा करने में आता है। श्रद्धा, कृतज्ञता, हमदर्दी और हानि परिशोध । इन्सान को अपने दोष नज़र नहीं आते और दूसरों की तारीफ भी इन्सान सुन नहीं सकता। नीच जीवन से मोक्ष ही सच्ची मोक्ष है। गुरू महाराज ने 800 आदेश दिए है और उनको खुद भी जी कर दिखाया है। फिर श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने अपने गाँव के एक बेटे और एक भाई के सुन्दर दृष्टांत बताए। सभा में श्रीमती विकासदेवी जी और श्रीमान श्रेष्ठ कुमार जी ने भी भाव प्रकाश किए।

दूसरी सभा, 3.00 बजे : सभापति : श्रीमान बलबहादुर सिंह जी। सभापति जी ने बताया कि मनुष्य के अंदर दो प्रश्न पैदा होने चाहिए कि मैं कौन हूं और क्या कर रहा हूं। फिर सभापति जी ने बातया कि नेचर क्या है, वह जड़ और शक्ति से बनी है। आत्मा क्या है। आत्मा परिवर्तनशील है, गठन प्राप्त शक्तियों का समूह है। आत्मा में शरीर बनाने, पालन करने की शक्तियां है। उन्होंने गेहूँ के दानें की उदाहरण देकर समझाया। फिर उन्होंने बताया कि मानसिक और भाव शक्तियां क्या है। अंत

में सभापति जी ने बताया कि देव शक्तियां सिर्फ देवात्मा में ही प्रकट हुई है और उनके ऊपर की शक्तियों की हम कल्पना भी नहीं कर सकते।

तीसरी सभा, रात 8.00 बजे : सभापति: श्रीमान बल बहादुर सिंह जी। इस सभा में सबसे पहले एक भजन 'धर्म पाए बिना जीना, जन्म अपना यह है खोना' गाया गया। फिर सभापति जी ने बताया कि देव धर्म बहुत भिन्न प्रकार का धर्म है। सारे धर्म एक जैसे नहीं होते। देव धर्म बताता है कि सबसे पहले धर्म हमें हमारे संबंध में, हमारे शरीर के संबंध, में भी हमें जीना सिखाता है। फिर धर्म हमें हमारे पारिवारिक स्तर पर जीवन सिखाता है। श्रीमान गुरबख्श सिंह जी का उदाहरण दिया गया। फिर धर्म हमें सामाजिक Level पर जीना सिखाता है। श्रीमान जी ने भाई भल्ल की उदाहरण दी और डा. सिरी राम जी का भी दृष्टांत पेश किया। सभापति जी ने फिर बताया कि धर्म हमें दूसरों के गुण दिखाता है उन्होंने बोसवेल की घटना बताई। अपने श्रद्धेय पिता जी की घटनाएं बताई। सभापति जी ने बताया कि धर्म हमें परोपकार की शिक्षा देता है। धर्म हमें अच्छे बनने की शिक्षा देता है। यह सभा बहुत प्रभावशाली थी।

25.2.2022, सुबह 10.30 बजे : सभापति : श्रीमान यशपाल भल्ला जी। इस सभा से कुछ समय पहले ही विशेष धर्म संबंधी श्रीमान बलदेव सिंह जी, श्रीमती सुरजीत बराड़ जी और श्रीमान यशपाल जी भल्ला अपने परिवार सहित पधार गए थे। सभापति जी ने फरमाया कि मनुष्य को अन्धेरा अपने विषय में है। अपने आत्मा, अपने लक्ष्य और परलोक के संबंध में अन्धेरा है। सभापति जी ने देवात्मा की वाणी का पाठ करके सुनाया। फिर उन्होंने अन्धेरे को बताने के लिए युद्ध और आतंकवाद की घटनाएं बताई जो बहुत प्रभावशाली थी। फिर सभापति जी ने बताया कि देवात्मा का आविर्भाव अन्धेरा दूर करने के लिए हुआ है। उनके आविर्भाव का कैसे इन्तज़ार हो रहा था। टैगोर साहिब के शब्दों में उन्होंने बताया। उन्होंने आत्मा और धर्म के विषय में चार महा सत्यों का भगवान की वाणी के द्वारा वर्णन किया। आत्मा में उच्च परिवर्तन का नाम धर्म है। सभापति जी ने श्रद्धेय कनल जी और पं. गिरवर प्रसाद जी के जीवनों की सुन्दर घटनाएं बताई। साधन करने की जोरदार अपील सभापति जी ने की। सभा के अन्त में विशेष सन्मान के योग्य श्रीमान बलदेव सिंह जी ने देव स्त्रोत और देव आरती में कैसे देव रुप का वर्णन है और उसकी क्या महिमा है उसका वर्णन किया। श्रीमान जी ने 'देववाणी के नोट' पुस्तक के पाठ करने की प्रेरणा दी। श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने प्रभावशाली सभा के लिए सभापति जी का धन्यवाद किया। श्रीमान सीता राम जी के परिवारिक जनों ने उनका सम्मान उनकी फोटो के आगे फूल अर्पण किया। श्रीमती सुरजीत बराड़ जी ने भी अपने भावों का प्रकाश किया। यह बहुत ही प्रभावशाली सभा देव आरती के गान के साथ समाप्त हुइ

(एक हाज़रीन)

मल्लेकां (सिरसा) से सत्संग

मल्लेकां (सिरसा) से सत्संग (पति - पत्नी वत 19.3.2022 से 22.3.2022 तक) में भाग लेकर आया हूँ। मेरे अन्दर यह कई बार होता आया है कि सत्संग से आने के बाद कुछ समय और कई बार कुछ दिनों तक सत्संग मण्डल के प्रभाव (ओरा सा) बना रहता है जैसे कि अपने इर्द - गिर्द सात्विक मण्डल बना रहता है।

किसी से ज्यादा बात करने का दिल नहीं करता, ज्यादा बोलने का यहाँ तक कि इधर उधर देखने का भी दिल नहीं करता। उपकार स्मरण का सिलसिला बहुत अच्छा चलने लगता है। दिल उस सात्विक मण्डल को याद करके डूबता जाता है। सबके बीच चलते फिरते भी मैं अपने अन्दर की अवस्था को बहुत शान्त महसूस करता हूँ और मन ही मन यह प्रार्थना करता हूँ कि काश! मेरे अन्दर की यह अनोखी सात्विक अवस्था बनी रहे। अब इस बार भी यह अवस्था बहुत सुन्दर रूप में महसूस कर रहा हूँ परन्तु अफसोस होता है कि कभी 1 - 2 दिन बाद ही और कभी 3 - 4 दिनों तक यह अवस्था रहने के बाद वह आभामण्डल प्राय: लुप्त अथवा खत्म सा हो जाता है। जब तक यह आभामण्डल रहता है श्रद्धा भाव बना रहता है, उपकार स्मरण चलता रहता है विकार जैसे कि दफा हुए रहते हैं काश! यह सुन्दर सात्विक अवस्था ज्यादा से ज्यादा रह सके।

इस बार के सत्संग के बाद अब श्रीमान सुखदेव सिंह जी के सारे प्रबन्ध, उनका हमारे सत्संग में पहुँचने के लिए प्रेरणा देना, वहाँ अपने सुख आराम को पीछे रखकर सब धर्म सम्बन्धियों के लिए दिन रात भाग दौड़, अपनी इच्छाओं को परे रख दूसरों की इच्छाओं को पूरा करने की कशमकश, फिर यथासम्भव सहयोगियों को साथ लेकर हमारे सब सुख - आराम का ध्यान रखना फिर सभा स्थान तक लाने ले जाने का प्रबन्ध आदि आदि सब याद आ - आ कर दिल को डूबो रहा है।

सभा करवाने वालों का बहुत अहसान महसूस कर रहा हूँ....

याद आ रहा है कि श्रद्धा और सन्मान के योग्य बड़े श्रीमान बलदेव सिंह जी जिन्होंने इतने लम्बे समय तक हम पर बहुत ज्यादा संग्राम किए है व जिन्होंने मुझे देव समाज के साथ जोड़ा है, उनका बहुत - बहुत उपकार महसूस हो रहा है।

सबसे प्राथमिक और बहुत ज्यादा संग्राम करने वाले श्रीमान डॉ० मुँशा सिंह जी जो मुझे देव समाज तक लाने वाले व और भी विशेष संग्राम करके मेरे दिलो दिमाग को सही दिशा में मोड़ने में बड़ी भूमिका निभाने वाले, जैसे कि आध्यात्मिक जीवन की जैसी कुछ भी इमारत बन सकी उसमें नींव की ईंटें जैसी त्यागयी भूमिका निभाने वाले बहुत याद आ रहे हैं व दिल उनके चरणों में बार - 2 झुक रहा है।

याद आ रहे हैं कि मेरे टीचर साहेबान विशेष तौर पर मेरे पिता जी, दादा जी, माता श्री, मेरे नाना जी, नानी जी आदि की सात्विक प्रकृति व उस सात्विक प्रकृति से बनी मेरी तुच्छ सी ठीक विरासत मिली, अत: उन

Regd. Postal No.CHD /0077/ 2021-2023
Regd. with Registrar News Paper No. 72258/88

सबके आगे दिल झुक रहा है। दिल में आ रहा है कि "मेरा मुझ में कुछ नहीं, जो कुछ हो सो तेरा" यानि सब कुछ मेरे इर्द गिर्द के अस्तित्त्वों की अथवा मेरे उपकारियों का सहयोग अथवा देन है।

इस प्रकार की अच्छी प्रेरणाओं से मन में यहाँ तक आ रहा है कि जब मेरा सारा वजूद ही उपकारियों का दान है व मेरे लिए अमानत है तो मुझे अपने शरीर, अपने दिमाग व अपने हृदय को किसी भी प्रकार से कुलच्छित करने का अथवा खराब करने का अधिकार नहीं है। यानि इस सच्चे गुरू की प्रेरणा यह दिखाती है कि मुझे किसी भी प्रकार की नीच वासना से अपने शरीर, दिमाग व हृदय (अपने वजूद) को नाश करने का कोई हक नहीं है। कई-कई बार ऐसे दृश्य सामने आते हैं कि कुदरत के विभिन्न विभागों के वजूद मेरे सामने आकर मुझसे यह सवाल करते हैं कि तुझे जो हमने यह वजूद दिया है उसको तुम्हें खराब करने का हक किसने दिया है।

डर भी है और सच्चाई भी है कि इस प्रकार की प्रेरणा थोड़े समय अथवा थोड़े दिनों तक ही रहती है, जिसमें नीच स्वार्थ और अहंकार और बाद में इन प्रभावों के छँट जाने से वही स्वार्थ और स्वार्थ से उपजे अन्य नीच अनुराग अपने महा घेरे में लेते जाते हैं।

"तुम्हारे दर से हे सतगुरू धर्म का दान मिलता है।"
"मैं बच पाऊँ हे सतगुरू जो धर्म का दान मिल जावे।"

अति तुच्छ

– गोपाल कृष्ण (गंगानगर)

बाकि पृष्ठ 13

और उसे पहचान कर जीवन ज्योति के सूर्य देवात्मा के साथ उच्च सूत्रों के द्वारा जुड़ जाओ, ताकि तुम तक लगातार देव ज्योति और देव तेज की किरणें पहुंचती रह सकें और तुम्हारी ज़िंदगी सफल और सार्थक हो सके। हमारी यह हार्दिक आकांक्षा है कि आज उद्‌भिद जगत के संबंध में विशेष साधन करते हुए तुम्हारे भीतर कृतज्ञता का भाव, दूसरों के लिए विशुद्ध सेवाकरी होने का भाव और उच्च सूत्रों के साथ देवात्मा के साथ जोड़ने के भाव जाग्रत और उन्नत हो सकें।

*श्रीमान बलदेव सिंह जी, एम. ए, (लाईफ़ वर्कर) मंत्री- **Dev Samaj Global**, प्रिंटर, पब्लिशर और मालिक "धर्म जीवन" ने **Surya Laser Den, Chandigarh** से छपवाकर म. नं. 3154, सैक्टर 21-डी, चण्डीगढ़ से प्रकाशित किया।*

Book Posts